International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 28-01-2021; Accepted: 13-02-2021; Published: 11-03-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 2; 2021; Page No. 23-26

कीर्तन घोषा और सूर-सागर के गोपी-उद्धव संवाद का तुलनात्मक अध्ययन

जयश्री काकति
हिन्दी विभाग, आर्य विद्यापीठ कॉलेज रिहाबाड़ी गुवाहाटी, असम, भारत

सारांश
महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव (सन 1449-1568) 'एक शरण नाम धर्म' के प्रवर्तक तथा असमीया भाषा-संस्कृति के पिता हैं। शंकरदेव के आगमन से पहले तक इस देश में तंत्र-मंत्र का अत्यंत प्रभाव था। शक्ति पूजा, शिव पूजा आदि का प्रचलन था। देवताओं को संतुष्ट करने के लिए निर्बलों को वलि दी जा रही थी। इन सबका विरोध करते हुए शंकरदेव ने एकईश्वरवाद की स्थापना की थी, जिसका मूल मंत्र है- 'एक देव, एक सेव, एक बिने नाहीं केव'। शंकरदेव द्वारा प्रवर्तित नव-वैष्णव धर्म मूलतः कृष्ण भक्ति प्रधान है। उनकी रचनाओं को काव्य, भक्तितत्व विषयक ग्रंथ, अनुवादमूलक ग्रंथ, अंकीय नाट, गीत और नाम-कीर्तन-इन भागों में विभक्त किया जा सकता है। नाम कीर्तन के अंतर्गत कीर्तन घोषा आता है।
सूरदास हिंदी साहित्य जगत की सगुरण धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। अष्टछाप के प्रमुख कवि सूरदास श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। अंधे होने ने के बाद भी उन्होंने कृष्ण का रूप सौन्दर्य का वर्णन बड़े ही सजीव रूप से किया हैं। सूरदास ने श्रीमदभागवत के दशम स्कन्ध के आधार पर कृष्ण चरित्र का वर्णन किया है।
शंकरदेव तथा सूरदास अलग-अलग क्षेत्र के दो प्रसिद्ध वैष्णव कवि हैं। दोनों ही कृष्ण के अनन्य भक्त है। दोनों ने कृष्ण को लेकर अनेक रचनाएँ रची हैं। 'भ्रमरगीत' अथवा 'गोपी-उद्धव संवाद' एसा ही एक प्रसंग है। दोनों की विषय वस्तु एक होने पर भी दोनों मे भिन्नता देखी जाती है।
इस शोध-पत्र में उक्त विषय कीर्तन घोषा और सूर-सागर के गोपी-उद्धव संवाद का तुलनात्मक अध्ययन पर विस्तारपूर्वक चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

मूलशब्द: गोपी-उद्धव संवाद, शंकरदेव, सूरदास

प्रस्तावना
महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव (सन 1449-1568) 'एक शरण नाम धर्म' के प्रवर्तक तथा असमीया भाषा-संस्कृति समाज के पिता हैं। शंकरदेव के आगमन से पहले तक इस देश में तंत्र-मंत्र का अत्यंत प्रभाव था। शक्ति पूजा, शिव पूजा आदि का प्रचलन था। इन सबका विरोध करते हुए शंकरदेव ने एकईश्वरवाद की स्थापना की थी। जिसका मूल मंत्र है- 'एक देव, एक सेव, एक बीने नाहीं केव'। शंकरदेव द्वारा प्रवर्तित नव-वैष्णव धर्म मूलतः कृष्ण भक्ति प्रधान है। उनकी रचनाओं को काव्य, भक्तितत्व विषयक ग्रंथ, अनुवादमूलक ग्रंथ, अंकीया नाट, गीत और नाम-कीर्तन- इन छः भागों में विभक्त किया जा सकता है। नाम कीर्तन के अंतर्गत कीर्तन घोषा आता है।
सूरदास (लगभग 1478 ई.-1583 ई.) हिंदी साहित्य जगत के सगुण धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। अष्टछाप के प्रमुख कवि सूरदास श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। अंधे होने ने के बाद भी उन्होंने कृष्ण का रूप सौन्दर्य का वर्णन बड़े ही सजीव रूप से किया हैं।
शंकरदेव तथा सूरदास दोनों विषय अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण है। शंकरदेव एक साथ ही एक धर्म प्रवर्तक, समाज सुधारक, कवि, नाट्यकार, अभिनेता, संगीतज्ञ तथा परम भक्त थे। समाज में हो रही

बुराइयों का विरोध कर एक शांतिपूर्ण समाज का जन्म देना ही उनका उद्देश्य था। सूरदास कृष्ण के अनान्य भक्त है। कृष्ण की हर रूप का वर्णन बड़े ही सजीव रूप से किया है। कृष्ण की बाल लीला वर्णन में उन्हें विशेष सफलता मिलने के कारण सूरदास को वात्सल्य के सम्राट कहे जाते है।

शंकरदेव तथा सूरदास दो भिन्न प्रान्तों के वैष्णव कवि होने पर भी दोनों में बहुत समानता है। श्रीकृष्ण संबन्धित अनेक विषयों का चित्रण दोनों ने किया है। विषयगत समानता मिलने पर भी कथन भंगिमा तथा शैली आदि में भिन्नता देखि जाती हैं।

शंकरदेव तथा सूरदास भारत के दो प्रांतो के महान साहित्यकार तथा वैष्णव कवि है। दोनों कृष्ण के अनन्य भक्त थे। भारतवर्ष के भक्ति-आंदोलन तथा भक्ति काल की आलोचना करने पर सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास आदि की योगदान तथा उनके कार्यों की ही चर्चा होती है। लग-भग उसी समय उत्तर-पूर्व भारत में श्रीमंत शंकरदेव तथा माधवदेव ने भी प्रचलित धार्मिक तथा सामाजिक रीति-नीति, आचार-विचार के विपरीत नये और प्रगतिशील विचार के साथ एक धार्मिक आंदोलन आरंभ किया था। पर आज भी शंकरदेव तथा माधवदेव को वह स्थान नहीं मिला जो उन्हें मिलना चाहिए। इस संगोष्ठी पत्र का लक्ष्य है कीर्तन घोषा और सूर-सागर के गोपी-उद्धव संवाद का तुलनात्मक अध्ययन करके महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव को असम की सीमा से बाहर निकालकर अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बैठाना।

शंकरदेवकालीन असम की राजनीतिक परिस्थिति अशांत थी। मार-काट, छीना-झपटी, हत्या और लूट के कारण सामान्य जनता का जीवन असुरक्षित था। इसी बीच पश्चिम से इस्लामी आक्रमण भी हो रहे थे। इसी समय शंकरदेव का आविर्भाव यूग द्रष्टा के रूप में हुआ। शंकरदेव के साहित्य में यद्पि जनता के सुख-दुख प्रतिफलित नहीं हुआ है लेकिन वे जनता के दुख-दर्द को देखकर ही सहज बोधगम्य भक्ति मार्ग, संगीत और अभिनय के माध्यम से जन मानस को साधना में निमग्न कराया है, इसमें संदेह नहीं है। आदरर्शात्मक होते हुए भी उनके साहित्य में मानवतावोध पग-पग पर मिलते हैं। वे ब्रजबूली भाषा के निर्माता, असमीय नाटक, बरगीत, और अभिनय कला के प्रवर्तक थे। अपने रचनाओं में नए शब्द, नए छन्द और नए प्रयोग करते हुए लोगों के मन में भक्ति भाव जगाने की कोशिश की थी। साहित्य में विविध रसों का प्रयोग, वर्णन कुशलता, स्पष्ट काव्यिक सौन्दर्य के मिलन करने के कारण और नीति-आदर्श के प्रति जनता की दृष्टि आकर्षण करने वाले शंकरदेव असमीया जाति के पथ प्रदर्शक हैं।

भक्तिकाल के सगुण धारा के कृष्ण-भक्ति शाखा के प्रमुख कवि सूरदास वल्लभाचार्य के परम शिष्य तथा अष्टछाप के प्रमुख कवि थे। वल्लभाचार्य के संपर्क में आने से पहले वे दास्य भाव तथा विनय भाव से पद लिखते थे, उनके संपर्क में आने के बाद सख्य, वात्सल्य तथा माधुर्य भाव की पद रचना करने लगे। सुरकाव्य का मुख्य विषय कृष्ण-भक्ति है। सूरदास की भक्ति पुष्टिमार्गीय भक्ति है।

भक्तिकाव्य का प्रेरणास्त्रोत मुख्यत: भागवत धर्म है, जिसमें राम और कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर काव्य रचना की गई थी। वैष्णव भक्ति का वैशिष्टय अनेक रूपों में समाज में प्रतिबिम्बित हुआ। प्राणीमात्र के प्रति प्रेम और उदार दृष्टि इस भक्ति का आधार है। शंकरदेव तथा सूरदास दोनों ने श्रीमदभागवत के दशम स्कन्ध के आधार पर कृष्ण संबंधी अनेक पदों की रचना की थी। सूरदास द्वारा रचित कृष्ण संबंधी पदों को 'सुरसागर' में संगृहीत किया गया हैं। यह एक गेय मुक्तक रचना है। श्रीमदभागवत के समान इसमें भी बारह स्कन्ध हैं। शंकरदेव द्वारा रचित कीर्तन घोषा में 2261 पद है। इसमें सृष्टि के आदि से लेकर भगवान के अंश रूप में कृष्ण का आविर्भाव, श्रीकृष्ण का वैकुंठ प्रयाण तक वर्णन है। विभिन्न समयों में विभिन्न खंडों में लिखी गयी 27 काव्यों का संकलन कीर्तन कीर्तन-घोषा में हुआ हैं। कीर्तन-घोषा में अंतर्गत गोपी-उद्धव संवाद 24 पदों की समष्टि है।

मामा कंश द्वारा कृष्ण को मथुरा बुलाने पर कृष्ण मथुरा चले जाते है। कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियाँ कृष्ण वियोग में तड़पती रहती है। कृष्ण अपना संदेश देकर उद्धव को वृन्दावन भेजते है। कृष्ण वियोग में गोपियों की जो दयनीय दशा हुई उसका वर्णन गोपी-उद्धव संवाद में हुआ है।

कृष्ण वियोग में गोपियों के मन में अनेक भवनाएं आती है। उन्हें लगने लगता है कि कृष्ण मथुरा तथा कुब्जा के प्रेम-पाश में बंधकर गोपियों को भूल गया है। शंकरदेव के शब्दों में-

एड़िला स्नेह प्रभु समुदाय।
मथुरा नागरी सुंदरी पाय ॥
ऐहि बुलि सबे लज्जाक एड़ि।
कांदन्त कृष्णर गुण सुमरि॥

(शर्मा 2014:100)

सूरदास के शब्दों में-

कहियौ ठकुराइति हम जानी।
अब दिन चारि चलहु गोकुल मैं सेवहु आइ बहुरि रजधानी॥
हमकौं हौंस बहुत देखन की, संग लियै कुबिजा पटरानी।
पहुनाई ब्रज कौ दधि माखन, बड़ौ पलंग अरु तातौ पानी॥

(आर्य और अग्रवाल 2007: 372)

शंकरदेव तथा सूरदास दोनों ने गोपी-उद्धव प्रसंग का वर्णन मिलता है। दोनों का विषयवस्तु एक होने पर भी दोनों में भिन्नता देखि जाती है। शंकरदेव के उद्धव ने कृष्ण द्वारा भेजा गया संदेश उसी रूप में गोपियों के सम्मुख रखा-

जनिलो तुमि मुख्य हरिदास।
पठाइला पितृर मातृर पाश॥
मुनिरो दुस्त्यज बंधुर स्नेह।
जानो आनि आछा कृष्ण-संदेश॥

(शर्मा 2014:100)

पर सूरदास द्वारा चित्रित उद्धव निराकारी ब्रह्म के उपासक थे। वह वृन्दावन जाकर कृष्ण का संदेश न देकर गोपियों के सामने निर्गुण ज्ञान की चर्चा करने लगते है। यह सब सुनकर गोपियों को गुस्सा आ जाता है और गोपियाँ उद्धव को भँवरे का उपमा देती है। गोपी-उद्धव संवाद को ही सूरदास ने भ्रमरगीत नाम दिया है। भ्रमरगीत का अर्थ है- भौरे को लक्ष्यकर कहे गए गीत।

रहु रे मधुकर मधु मरवारे।
कौन काज या निरगुन सौं, जीवहु कान्ह हमारे॥
लोटत पीत पराग कीच मैं, बीच न अंग संम्हारे।
बारम्बार सरक मदिरा की, अपरस रटत उघारे॥
तुम जानत हौ वैसी ग्वारिनि, जैसे कुसुम तिहारे।
घरि पहर साबहिनि बिरमावत, जेते आवत कारे॥
सुंदर बदन कमाल-दल लोचन, जसुमति नंद-दुलारे।
तन मन सूर अरपि रहीं स्यामहि, का पै लेंहि उधारे॥॥

(आर्य और अग्रवाल 2007: 355)

शंकरदेव द्वारा रचित गोपी-उद्धव संवाद राधा विहीन है। सूरदास ने भी गोपी-उद्धव संवाद में 'राधा' शब्द का प्रयोग नहीं किया है। पर कुछ स्थानों में परोक्ष रूप से राधा की विरह दशा का वर्णन करते हुए देखि जाती है-

लरिकाई की प्रेम कहौ अलि कैसें छुटत।
कहा कहौ ब्रजनाथ चरित, अंतरगति लूटत।।
वह चितवनि वह चाल मनोहर, वह मुसकानि मंद-धुनि गावनि।
नटवर-भेष नंद-नन्दन कौ वह विनोद, वह बन तै आवानि॥
चरन कमल को सौंह करति हौं, यह संदेस मोहिं विष लागत।
सूरदास पल मोहिं न बिसरति, मोहन मूरति सोवत जागत॥ ॥

(आर्य और अग्रवाल 2007:411)

उपलब्धियाँ

- शंकरदेव तथा सूरदास दोनों ने श्रीमदभागवत को आधार मानकर ही गोपी-उद्धव संवाद लिखे थे।
- शंकरदेव का गोपी-उद्धव संवाद और सूरदास भ्रमरगीत की कथा वस्तुतः एक ही है। शंकरदेव ने 'भ्रमरगीत' शब्द का प्रयोग कही भी नहीं किया हैं।
- शंकरदेव का गोपी-उद्धव संवाद राधा विहीन है। सूरदास ने परोक्ष रूप से एक विशेष गोपी (राधा) का उल्लेख किया है।
- सूरदास चित्रित उद्धव निरकारी ब्रह्म के उपासक थे, पर शंकरदेव द्वारा चित्रित उद्धव के बारे में एसी कोई बात उल्लेखित नहीं है।
- शंकरदेव की भाषा प्राचीन असमीया भाषा है। सूरदास ने ब्रजभाषा में भ्रमरगीत लिखा था।

- शंकरदेव ने गोपी-उद्धव-संवाद में 25 पदों का समावेश किया, जबकि सूर का भ्रमरगीत व्यापक है। अपने 171 पदों में गोपी-उद्धव की समेटा है।

निष्कर्ष

शंकरदेव तथा सूरदास भारत के दो अलग प्रान्तों के वैष्णव कवि हैं। दोनों का आराध्य कृष्ण है। पुष्टिमार्गी होने के कारण सूरदास ने राधा-कृष्ण की जुगल मूर्ति की उपासना की। राधा जिस तरह से कृष्ण को पाने के लिए समस्त कष्टों को सहन कर लेती है, उसी रूप से सूरदास भी समस्त बाधाओं का सामना करता है। शंकरदेव के रचनाओं में राधा के लिए कही स्थान नहीं है। शंकरदेव के दृष्टि ममें सभी गोपियाँ समान है। यहा गोपी जीवात्मा का प्रतीक है और विष्णु परमात्मा का। अतः परमात्मा सभी जीवात्मा की मनोकामना समान रूप से पूर्ण कराते है।

संदर्भ सूची

1. आर्य, देवेन्द्र और सुरेश अग्रवाल (सम्पा). सुर सागर सटीक. प्रथम सं., नई दिल्ली: अशोक प्रकाशन, 2007.
2. शर्मा, नवीन चंद्र. महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव. प्रथम सं., गुवाहाटी, बनलता प्रकाशन, 2014
3. महन्त, चित्र. असमीया साहित्य का इतिहास. प्रथम सं., गुवाहाटी, असम हिन्दी प्रकाशन, 2009
4. रायचौधुरी, भूपेन्द्र (सम्पा). असमीया साहित्य निकष. प्रथम सं., गुवाहाटी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2006